AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

कुषाणों का उद्भवः सिद्धांत और इतिहास

ORIGINAL ARTICLE

Author
सुमित कुमार
शोधार्थी
स्नातकोत्तर इतिहास विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय
हजारीबाग, भारत

शोध सार

कुषाणों के उद्भव को विभिन्न साहित्यिक एवं पुरालेखीय स्रोतों के आधार पर बताने का प्रयास किया गया है। चीन के प्रथम राजवंश के इतिहास में जिसके इतिहासकार पान–कु (पान–को) बताते है कि जब यू–ची जनजाति के लोग ता–हिया क्षेत्र में स्थापित हुए, वही पर यह समुदाय पांच हिस्सों में बंट गया। उत्तरवर्ती हान राजवंश के इतिहास के अनुसार यू–ची की राजधानी लान–सी थी जो बदाख्शां में अवस्थित थी। इस इतिहास में पांच भागों में हुए विभाजन के संबंध में दी गई जानकारी कुछ भिन्न है। शक–ईरानी उत्पत्ति सिद्धांत कुषाणों के उपाधियों पर ईरानी संस्कृति के प्रभाव से जुड़े प्रमाणों पर आधारित थी। चीनी इतिहास में वर्णित क्यूई–श्वांग अर्थात कुषाण तथा यू–ची जिन्होंने ता–हिया पर अपना वर्चस्व स्थापित किया और जिन्होंने बैक्ट्रा या अलेक्जेंड्रीया के लान–शी को अपनी राजधानी बनाई। इन गतिविधियों को समकालीन तथा परवर्ती यूनानी एवं लैटिन इतिहासकारों ने भी अपने लेखन में महत्वपूर्ण स्थान दिया। कुषाणों का तुर्की उत्पत्ति सिद्धांत भी प्रस्तावित किया गया है, जिसमें कुषाणों को तुरूषका से जोड़ा गया है। भारतीय स्रोत में कुषाणों के संबंध में कल्हण की राजतरंगिणी को प्रमाणिक माना जाता है।

मुख्य शब्द

मंगोलायड उत्पत्ति सिद्धांत, शक –ईरानी उत्पत्ति सिद्धांत, यूनानी एवं लैटिन स्रोत, तुर्की उत्पत्ति सिद्धांत, भारतीय स्रोत.

इतिहासकारों के बीच कुषाण राजवंश सदैव महत्वपूर्ण रहा है। इस विषय की व्याख्या में विभिन्न स्रोतों के आधार पर एकाधिक मतों को मान्यता प्राप्त है। यूनानी सिक्कों में कैडफिसेज–1 को कोषशानु अथवा कोषांशु के नाम से मान्यता मिली जबकि खरोष्ठी में इन्हें कुषाण कहा गया है। भारतीय खरोष्ठी अभिलेखों में खुषाण अथवा गुशाण का भी प्रचलन देखा गया है। मध्य एशिया से प्राप्त कई अभिलेख में कुषाणों को कुर्शान भी कहा गया है।[1] मथुरा के निकट प्रसिद्ध माट अभिलेख में कुषाण पुत्र वर्णित है।[2] चीनी इतिहास में क्यूई–श्वांग वर्णित है। कुमारलता नाम के कल्पनामंडिटिका में कनिष्क को किउषा वंश का बताया गया है।[3] वैरन वॉन स्टेल हालस्टिन ने कुषाण को कुशे शब्द का बहुवचन बतलाया है।[4] कुष (कुषी) शब्द की भी चर्चा हुई है। इस शब्द के आधार पर कुषाणों की चर्चा उनके परिवार से प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से संबंध रखने वाले लोगों के द्वारा बहुतायात देखने को मिलता है। भारत में सामान्यतः इनको कुषाणों के रूप में जाना जाता है। मणिक्याला अभिलेख में गुश्नावसासन–वर्धक के नाम से जिस व्यक्ति को संबोधित किया गया है, वह निश्चित रूप से कुषाण वंश से संबंधित है।[5] कुछ इतिहासकारों का मत है,

कि कुषाण वंश के संस्थापक कुजुल कडफिसेज का व्यक्तिगत नाम कुषाण था।[6] इसलिए कुषाण वंश का नाम उसके व्यक्तिगत नाम से प्रचलित हुआ। ऐसा प्रतीत होता है कि कुषाण शब्द की उत्पत्ति से संबंधित सभी संदर्भों के संकलन के लिए एक विशाल संदर्भ ग्रंथ सूची तैयार की जा सकती है। इस दृष्टि से कनिंघम के द्वारा किया गया प्रयास सबसे महत्वपूर्ण है।[7] फग्यूर्सन और ओल्डेन बर्ग सिद्धांत के अनुसार कनिष्क ने ही 78 ई. में शक–संवत् की स्थापना की थी।[8] यह सिद्धांत बाद में स्मिथ तथा एकाधिक ब्रिटिश इतिहासकार और भारतीय इतिहासकारों के द्वारा भी स्वीकृत किया गया है।[9] इस विषय पर 1913 में रॉयल एशियाटिक सोसायटी के द्वारा एक अधिवेशन बुलाया गया था, जिसका सम्पूर्ण विमर्श उपलब्ध है। कनिष्क के काल से संबंधित अन्य विमर्शों की चर्चा प्रबंध में यत्र–तत्र आवश्यकता अनुसार भी जा रही है।

कुषाणों की उत्पत्ति से संबंधित चीनी सिद्धांत[10]

यह सिद्धांत मुख्य रूप से चीनी इतिहास को आधार मानकर प्रतिपादित किया गया है जिसमें यू–ची जनजाति का उल्लेख किया गया है। यू–ची लोगों के द्वारा पश्चिमवर्ती प्रसार किया गया और अंततः उन्होंने ता–हिया क्षेत्र पर अपना वर्चस्व स्थापित किया। इस क्षेत्र पर उनके पूर्व शकों का आधिपत्य था। इसी सिद्धांत के अंतर्गत यह स्वीकार किया गया कि ता–हिया क्षेत्र में यू–ची जनजाति पांच भागों में विभक्त हो गई। इनके आपसी संघर्ष में अंततः क्यूई–श्वांग या कुषाणों का वर्चस्व स्थापित हुआ। चीन के प्रथम राजवंश के इतिहास में जिसके इतिहासकार पान–कु (पान–को) बताते है कि जब यू–ची जनजाति के लोग ता–हिया क्षेत्र में स्थापित हुए, वही पर यह समुदाय पांच हिस्सों में बंट गया। इस स्थिति के पश्चात इनकी यायावर राजनीतिक–सामाजिक प्रकृति समाप्त हो गई, जो कि पूर्व से चली आ रही थी। ता–यू–चि राजतंत्र की राजधानी कियेन–ची (लान–चू) थी, जिसके दक्षिणी सीमा पर कि–पिन अवस्थित था। पान–कु के इतिहास में जिन पांच भागों का वर्णन है उनमें से क्यूई–श्वांग प्रजाति के लोगों को कुषाणों से जोड़ा गया है जिनकी राजधानी होउ–साव (अज्ञात स्थान) थी। वर्तमान परिचर्चा के संबंध में इनके वृहत्तर इतिहास की चर्चा नहीं की जा रही है। इनके विषय में अग्रेतर सूचनाएं उत्तरवर्ती हान राजवंश के इतिहास से प्राप्त होती है जिसके इतिहासकार फान–ये (449 ई.) थे और उस रचना को होउ–हान–शु के नाम से जाना जाता है। इसमें 25 ई. से लेकर सम्राट नदान (107–125 ई.) तक का इतिहास वर्णित है। इस इतिहास में यू–ची तथा क्यूई–श्वांग से संबंधित जानकारी पर्याप्त रूप से उपलब्ध है। इसके अनुसार यू–ची की राजधानी लान–सी थी जो बदाख्शां में अवस्थित थी। यू–ची सम्पूर्ण ता–हिया साम्राज्य के लिए उल्लिखित है। इस इतिहास में पांच भागों में हुए विभाजन के संबंध में दी गई जानकारी कुछ भिन्न है। इन पांच हिस्सों में से प्रत्येक को हि–हाउ कहा गया है। होउ–हान–शु के अनुसार पांच हिस्सों के पृथक होने के स्थान पर एक समग्र ता–हिया राजवंश का उल्लेख है तथा यू–ची के द्वारा ही ता–हिया साम्राज्य को पांच हिस्सों में बांट दिया गया। क्यूई–श्वांग राजा कियोउ–स्टेशियो–कियोउ के द्वारा इन पांचों भागों को फिर से एक करके क्यूई–श्वांग साम्राज्य की स्थापना की गई। इस राजा और उसके पुत्र को इस साम्राज्य के प्रमुख शासकों के रूप में देखा गया है। एक जगह चर्चा की गई है कि उपरोक्त पांचों हि–हाउ, यू–ची के अधिपत्य को स्वीकार करते हैं किन्तु जब यू–ची में ये पांचों हि–हाउ मिल गए थे तो फिर इस संबंध में पृथक सूचनाओं की आवश्यकता भी नहीं है। उपरोक्त मंगोलॉयड उत्पत्ति सिद्धांत की सबसे बड़ी सीमा यह है कि यह पूर्ण रूप से चीनी इतिहासकारों के दस्तावेज पर आधारित है। कुषाणों के द्वारा अपनाई गई संस्कृति, उनके द्वारा धारण किए गए उपाधियों, वेषभूषा अथवा पहनावा का वर्णन नहीं मिलता है। इन इतिहासकारों ने कुषाणों की भाषा और शकों की भाषा को एक ही बतलाया है, क्योंकि इनके द्वारा निर्गत सिक्कों में खोतानी–शक लिपि का प्रयोग हुआ है। ऐसा संभव है कि उत्तर पश्चिम भारत में शक शासकों के बाद कुषाणों का शासन हुआ, इसलिए शक भाषा का उन्होंने प्रयोग किया होगा लेकिन इसके विरूद्ध यह प्रमाण भी मिलता है कि बैक्ट्रिया में कुषाणों के द्वारा शक भाषा का प्रयोग नहीं किया गया था।[11] बैक्ट्रिया क्षेत्र में ही इनका प्रारंभिक ता–हिया साम्राज्य था इसलिए केवल चीनी स्रोतों पर आश्रित कुषाणों के मंगोलायड उत्पत्ति सिद्धांत को स्वीकार करने में मतभेद है। कुषाणों की राष्ट्रीयता को चिन्हित करने के लिए अन्य स्रोतों से उपलब्ध सूचनाओं को भी ध्यान में रखा गया है। इस संदर्भ में यूनानी, लैटिन और संस्कृत के शास्त्रीय स्रोतों को अनदेखा नहीं किया जा सकता।

शक –ईरानी उत्पत्ति सिद्धांत

कुषाणों के शक–ईरानी उत्पत्ति का सिद्धांत का समर्थन मुख्य रूप से स्टेन कोनोव के द्वारा किया गया है।[12] कुषाणों की उत्पत्ति से संबंधित स्टेन कोनोव ने जिन स्रोतों का उपयोग किया वे कुषाणों के उपाधियों पर ईरानी संस्कृति के प्रभाव से जुड़े प्रमाणों पर आधारित थी। उनका मानना है कि चीन के अधिनस्थ तुर्किस्तान का जो हिस्सा था, वही ता–हिया क्षेत्र है और जहां पर ईरानी भाषा का वर्चस्व था।[13] कटशे ने चीनी तुर्किस्तान के इस भाषा को खोतानी कहा है।[14] निश्चित रूप से यही शकों की भी भाषा थी। कुषाण के सिक्कों एवं अभिलेखों में प्रयुक्त इस भाषा को स्टेन कोनोव ने अपनी व्याख्या का आधार माना है। स्टेन कोनोव ने जेड़ा अभिलेख का जिक्र किया है जिसमें यगुगा, कुजुला, अर्थुना, मूरोडा तथा मझका आदि शब्दों का प्रयोग है । इसके अतिरिक्त कनिष्क एवं उसके उत्तराधिकारीयों के द्वारा निर्गत सिक्कों में खोतानी–शक लिपि का प्रयोग हुआ है। जैसे – राजा के लिए इस भाषा में शाऊ का प्रयोग हुआ है, जिसे कुषाणों के अभिलेखों में सशाऊ के रूप में लिया गया है। शाही या शाह शब्दों का प्रयोग भी इसी आधार पर किया गया है इसलिए स्टेन कोनोव स्वीकार करते है कि भाषाई दृष्टिकोण से कुषाण ईरानी मूल से प्रतीत होते हैं।[15] इनके अनुसार यह निष्कर्ष भी निकाला जा सकता है कि कुषाणों की उत्पत्ति शकों के समुदाय से अभिन्न रूप से जुड़ी है। उपरोक्त दोनों उत्पत्ति सिद्धांतों के आधार पर मुख्य सूचना यहीं प्राप्त होती है कि यू–ची के द्वारा पांच हिस्सों में विभक्त उस समुदाय को एक राजवंश के रूप में स्थापित किया गया, जिसको ता–यू–ची कहा गया, जिसकी राजधानी बदाख्शां के लान–ची नामक स्थान पर थी और प्रारंभिक अवस्था में यह राज्य ता–हिया कहलाया। 5वीं शताब्दी तक यह क्षेत्र कुषाणों के अधिनस्थ रहा।[16] यू–ची के वर्चस्व की स्थापना का काल चीन के उत्तरवर्ती हान राजवंश (हाउ–हान–शु) के समकालीन था। कुषाणों के द्वारा जिस साम्राज्य की स्थापना की गई, वह उनके पहले शको के अधिन था।

यूनानी एवं लैटिन स्रोत

चीनी इतिहास में वर्णित क्यूई–श्वांग अर्थात् कुषाण तथा यू–ची जिन्होंने ता–हिया पर अपना वर्चस्व स्थापित किया और जिन्होंने बैक्ट्रा या अलेक्जेंड्रीया के लान–शी को अपनी राजधानी बनाई – इन गतिविधियों को समकालीन तथा परवर्ती यूनानी एवं लैटिन इतिहासकारों ने भी अपने लेखन में महत्वपूर्ण स्थान दिया। स्ट्राबों के अनुसार बैक्ट्रिया पर शकों ने अपना आधिपत्य जमाया। इनके द्वारा यूनानी शासकों को अपदस्थ किया गया तथा इनके वंशजों ने असीयोई, हासीयानोई, तोचारोई तथा सकराओनोई इत्यादि की चर्चा की गई है।[17] त्रोगस के 41वें पुस्तक में डियोडोटस के द्वारा बैक्ट्रिया में एक साम्राज्य के गठन की चर्चा हुई है जिसकी स्थापना तीसरी शताब्दी ई. पू. के मध्य में हुई थी। इसी स्रोत में स्कीथियन जनजातियों के द्वारा और प्रमुख रूप से सराबुसेई एवं असीयानी के द्वारा बैक्ट्रिया और शोकडियाना पर अधिपत्य जमाने की बात की गई है।[18]

जस्टिन के अनुसार सोबोडियनो के द्वारा बैक्ट्रियाई शासकों के साम्राज्य और स्वतंत्रता को छीन लिया गया। बाद में इनको पार्थियन शासकों के द्वारा भी दबाया गया। त्रोगस के 42वें पुस्तक की प्रस्तावना में असीयानी नामक शासक की चर्चा हुई है, जो तोचारिन शासक था वह इसमें सराबुसेई को पराजित किया।[19] स्टेन कोनोव ने असीयानीयो को चीनी दस्तावेज के यु–ची जनजाति से चिन्हित किया है। इस प्रकार चीनी दस्तावेज में वर्णित कुषाणों को शास्त्रीय युनानी इतिहासकारों ने भी महत्व दिया है। ऐसा मान लेना तभी संभव है, जब कुषाणों के पांच हि–हाउ अथवा याब–गो में से क्युई–श्वांग सबसे प्रभुत्वशाली रहा हो और इनके विभाजन और एकीकरण की घटना यू–ची के आक्रमण के पूर्व घटित हो चुकी हुई हो इसलिए क्यूई–श्वांग अथवा कुषाण को तोचारिन के रूप में चिन्हित करने के लिए भारतीय स्रोतों का भी उल्लेख किया जाना अपेक्षित होगा। ऐसी परिस्थिति में कुषाणों की राष्ट्रीयता को प्रमाणित करने के लिए कुछ और प्रश्न भी बड़े हो जाते हैं। कुषाणों के इतिहास लेखन के संबंध में इन प्रश्नों पर प्रकाश डाला गया है।[20] इन इतिहासकारों के द्वारा कुषाण शासकों के नाम, उनकी उपाधियां, सिक्कों एवं अन्य पुरातात्विक सामग्रीयों में प्राप्त इनकी वेशभूषा, पहनावा पर विशेष चर्चा की गई है। इन्हीं साधनों के द्वारा अर्थात शास्त्रीय यूनानी एवं चीनी स्रोतों में वर्णित क्रमशः तोचारियन अथवा यू–ची जनजाति को कुषाणों के रूप में रेखांकित करने की मान्यता रही है। एफ. डब्ल्यू. थामस ने प्रस्ताव रखा है कि कुषाण, तुर्क या मंगोल नहीं थे, बल्कि वह ईरानी

शकों की एक प्रशाखा थे।[21] कडफिसेज, कनिष्कि (कनिष्क), ओएस्की (हुविष्क) जैसे नाम मौसेज, एसेज, शिगाखरिस जैसे इरानी नामों से अधिक मिलते–जुलते हैं और इसलिए पार्थियनों से इनका संबंध नहीं हो सकता। स्कीथियन नाम स्पर्गपेथेस की तुलना कडफिसेज से की जा सकती है जो ईरानी भाषा में कडा (ईश्वर) तथा फिसे (स्वरूप या आकार) से ली गई होगी। ईरानी भाषा में 'सु' का अभिप्राय 'अच्छाई' से है। जिसके आधार पर सुविष्क या हुविष्क नाम प्रचलन में आया।

तुर्की उत्पत्ति सिद्धांत

कुषाणों की तुर्की उत्पत्ति सिद्धांत भी प्रस्तावित की गई जिसमें कुषाणों को तुरूषका से जोड़ा गया है। इस सिद्धांत में विशाल नासिका जैसे लक्षणों को अधिक महत्व देते हुए उन्हें चीनी–तुर्किस्तान का निवासी बतलाया गया है।[22] लेकिन इस क्षेत्र के निवासियों की नस्ल में तुर्की तत्वों का प्रभाव अपेक्षाकृत परवर्ती काल में अधिक देखने को मिलता है। स्टेन कोनोव के द्वारा जोइस नामक विद्वान का हवाला दिया गया जिन्होनें वाखी क्षेत्र में अधिकांश जनसंख्या का संबंध गलचा नामक प्रजाति से जोड़ा है जिसके आधार पर इनके ईरानी उत्पत्ति को प्रमाणित किया जा सकता है। कल्हण और हेमचन्द्र ने अपने वृत्तांतों में कुषाणों के तुर्की उत्पत्ति को स्वीकार किया है लेकिन यवुगा या कुजुला जैसे नाम तुर्की भाषा के प्रतीत नहीं होते।[23] स्टेन कोनोव के अनुसार कुषाण मूलतः ईरानी उत्पत्ति के होंगे जिन्होने कालांतर में अन्याअन्य उपाधियां धारण कर ली।[24] कुषाणों ने उस क्षेत्र पर शकों का स्थान लिया और शक स्रोतों में जउबा कहा गया है। स्पष्ट है कि कुजुल कडफिसेज के संबंध में इन नामकरणों के आधार पर कुषाणों की उत्पत्ति सिद्ध करना अनेक समस्याओं से परिपूर्ण है इसलिए कुषाणों के तुर्की उत्पत्ति या ईरानी उत्पत्ति बिना अटकलों के अथवा केवल उनके नस्लीय लक्षणों और परवर्ती भारतीय साहित्य के वर्णनों के आधार पर नहीं सिद्ध की जा सकती। एफ. हर्थ के अनुसार कुषाणों को तुर्की याबगु तथा चीनी स्रोतों में वर्णित हि–हाउ के आधार पर कुजुल कडफिसेज को तुर्की उत्पत्ति का स्वीकार किया गया है।[25] इन्होंने भी तुर्की उत्पत्ति सिद्धांत को प्रमाणित करने के लिए राजतरंगिणी (1.170) में वर्णित कांधार के तुर्की शासकों के द्वारा उनके कनिष्क के वंशज होने की बात का सहारा लिया। इन शासकों को राजतरंगिणी में तुरूष्क शासक के रूप में देखा गया है। उनके सिक्कों के विश्लेषण के आधार पर भी उनकी तुर्की राष्ट्रीयता को सिद्ध करने का प्रयास किया गया है। केनेडी का भी मानना है कि कुषाण तुर्की परिवार के थे और कनिष्क के विभिन्न स्रोतों में परिलक्षित बिन्दुओं के आधार पर भी वही बात सिद्ध होती है।[26] तुर्कीस्तान में भी शासकों का चित्रण ढ़ीले–ढ़ाले लंबे कोट और पांवों में भारी–भरकम बूट के रूप में किया गया है जो कुषाणों के चित्रण में भी दिखलाई पड़ता है।

पुराणों में प्रस्तुत वंशावलियों में तुषार शासकों की सूची भी है जिन्होंने यवनों को हटाकर भारत के पश्चिमोत्तर में शासन किया। इन सूचियों में भी सामान्य रूप से चौदह तुषार शासकों के नाम अंकित हैं।[27] मतस्य पुराण में सप्त–वर्ष–शतानीह अथवा 107 वर्ष के तुषार शासन की अवधि बतलाई गई है जबकि वायु एवं ब्रह्मांड पुराणों में तुषार शासकों की कुल अवधि पंच–वर्ष–सतानीह अर्थात 105 वर्ष उल्लिखित है। तुषार या तुरष्क शासकों का उल्लेख रामायण, महाभारत के अतिरिक्त बौद्ध साहित्य के दो प्राचीन स्रोतों सद्धर्मस्मृतियूपस्थान तथा महामयूरी में भी की गई है। इनको हिमालय के उत्तर में पठारी प्रदेश का बतलाया गया है, जिनकी चर्चा भारतीय साहित्य में 7वीं शताब्दी के मध्य तक होती रही है। उपरोक्त सभी स्रोतों में भारतीय सीमा से परे तुषारों के साथ इनका संबंध बतलाया गया है। पौराणिक स्रोतों में माना गया है कि तुषार शासकों के द्वारा यूनानी शासकों को हराकर भारत पर आधिपत्य बनाया गया और इनके 14 शासकों ने 100 वर्षों से अधिक शासन किया। विभिन्न अभिलेखों एवं सिक्कों में इनको ही कुषाणों के रूप में देखा गया है। जिस प्रकार यूनानी स्रोतों में तोचारियन एवं शकों के बीच संबंध बतलाया गया है उसी प्रकार भारतीय स्रोतों में भी कुषाणों का संबंध शकों से बतलाया गया है। ऐसा माना जा सकता है कि यूनानी एवं भारतीय स्रोतों में शकों एवं कुषाणों को प्रायः एक ही जनजाति या परिवार से जोड़ कर देखने की परंपरा रही है। नक्शे–ए–रूस्तम अभिलेख में शकों के प्रजातियों का वर्णन मिलता है।[28] ऐसा संभव है कि तोचारियनों को ही भारत में तुषार बोला गया जिनका संबंध मूल रूप से प्रारंभिक शकों से था। कुषाण एवं शक सिक्कों में भी शासकों के चित्रण में समानताएं हैं। जहां चीन के हुण आक्रमणकारियों का भारतीय सामाजिक–धार्मिक परिवेश में

अंगीभूतिकरण सरलता से नहीं हो सका वहीं पर कुषाणों के प्रथम शासक कुजुल कडफिसेज के द्वारा निर्गत सिक्कों पर उसको बुद्ध के साथ सत्यधर्मस्थी तस्य के रूप में दिखलाया गया है। उसके पुत्र विम कडफिसेज को शिव का उपासक बतलाया गया, कनिष्क को सर्वधर्म समभाव रखने वाले शासक के रूप में तथा हुविष्क को उसके द्वारा मथुरा में स्थापित पूण्यशाला के कारण और शिव के उपासक के रूप में देखा जा सका। कुषाण शासक वासुदेव का नाम स्वतः आख्यायित है। इस प्रकार ऐसा मान लेना कठिन होगा कि कुषाणों के भारत आगमन के समय वे हुणों अथवा अन्य आक्रमणकारी, बर्बर प्रजातियों की अवस्था में थे। उसके स्थान पर यह मान लेना श्रेयस्कर है कि कुषाणें के भारत प्रवेश के समय कुषाण शासक भारतीय धार्मिक चिंतन एवं संस्कृति से परिचित भी थे, और स्वतः सहानुभूति रखते थे। ऊपर की गई सम्पूर्ण परिचर्चा के निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि भारत में आगमन के पहले कुषाणों का बैक्ट्रिया प्रदेश अथवा उसके दक्षिणी क्षेत्र से संबंध था और वे शकों के परिवार से भी संबंधित थे। स्रोतों में उसको ही तोचारियन या तुखारों के रूप में संबोधित किया गया है। उनकी चर्चा चीनी स्रोतों में, यू–ची के रूप में की गई है जिन्होंने प्रारंभिक दौर में ता–हिया अर्थात बैक्ट्रिया प्रदेश पर शासन किया। अंतिम यूनानी शासकों को पराजित करने के बाद कुषाणों का नेतृत्व कर रहे कुजुल कडफिसेज ने तथा उनके पुत्र विम कडफिसेज ने भारत पर अपना प्रभाव जमाया इसलिए उनके मंगोल उत्पत्ति के सिद्धांत को स्वीकार नहीं किया जा सकता।

निष्कर्ष

कुषाणों का इतिहास प्राचीन भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। इनके समय न केवल इण्डो–रोमन व्यापार अपने चरमोत्कर्ष पर रहा बल्कि गांधार और मथुरा शैली की कलाओं का भी पूर्ण विकास हुआ। बौद्ध धर्म और हिन्दु धर्म में नए प्रतिमा स्थापित हुए। इनका साम्राज्य प्रायः मध्य एशिया से लेकर बिहार तक और पश्चिम में दक्कन तक फैला था। भारत में कुषाणों के संबंध में इतिहास में विद्वानों के बीच मतैक्य नही रहा है, किन्तु इस संबंध मे चीन के इतिहास में, इण्डो–ग्रीक इतिहास में और भारतीय इतिहासकारों के द्वारा विभिन्न तथ्यों के आधार पर ऐतिहासिक मान्यताए प्रचलित की गई है।

संदर्भ सूची

1. कोनोव, स्टेन (सम्पादक), (1969) *कॉर्पस इंस्क्रिप्शनम् इंडिकारम्,* वोल्यूम II, भाग–1, इण्डोलोजिकल बुक हाउस, वाराणसी, पृ. 49।
2. आर्कियोलोजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, एनुअल रिपोर्ट, (1911–12) पृ. 12।
3. कोनोव, स्टेन (सम्पादक), (1961) *कॉर्पस इंस्क्रिप्शनम् इंडिकारम्,* वोल्यूम II, भाग–1, इण्डोलोजिकल बुक हाउस, वाराणसी, पृ. 50।
4. फ्लीट, जे. एफ. (1914) दि नेम कुषाण, *दि जर्नल ऑफ दि रॉयल एशियाटिक सोसायटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एण्ड आयरलैंड,* पृ. 79।
5. जायसवाल, के. पी. (1930) प्रोब्लम्स ऑफ शक–सातवाहना हिस्ट्री, *जर्नल ऑफ दि विहार एण्ड ओड़िशा रिसर्च सोसायटी,* पृ. 227–316।
6. कनिंघम, ए. (1871) ऑर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया रिपोर्ट, वोल्यूम I, गवर्नमेंट सेंट्रल प्रेस, शिमला, पृ. 68।
7. पुरी, बी. एन. (1965) *इंडिया अंडर दि कुषाणाज,* भारतीय विद्या भवन, मुम्बई, पृ. 08।
8. किंग्समिल, डब्ल्यू. (1882) दि इंटरकोर्स ऑफ चाइना विथ ईस्टर्न तुर्किस्तान एण्ड दि एडजसेंट कंट्रीज इन दि सेकेन्ड सेन्चुरी बी. सी., *जर्नल ऑफ दि रॉयल एशियाटिक सोसायटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एण्ड आयरलैंड,* पृ. 82।

9. कोनोव, स्टेन (सम्पादक), (1969) *कॉर्पस इंस्क्रिप्शनम् इंडिकारम्,* वोल्यूम II, भाग–1, इण्डोलोजिकल बुक हाउस, वाराणसी, पृ. 51।
10. पुरी, बी. एन. (1965) *इंडिया अंडर दि कुषाणाज,* भारतीय विद्या भवन, मुम्बई, पृ. 04।
11. कोनोव, स्टेन (सम्पादक), (1969) *कॉर्पस इंस्क्रिप्शनम् इंडिकारम्,* वोल्यूम II, भाग–1, इण्डोलोजिकल बुक हाउस, वाराणसी, पृ. 52।
12. पुरी, बी. एन. (1965) *इंडिया अंडर दि कुषाणाज,* भारतीय विद्या भवन, मुम्बई, पृ. 05।
13. कोनोव, स्टेन (सम्पादक) (1969) *कॉर्पस इंस्क्रिप्शनम् इंडिकारम्,* वोल्यूम II, भाग–1, इण्डोलोजिकल बुक हाउस, वाराणसी, पृ. 20–21।
14. उपरोक्त।
15. फ्रैंके (1914) नोट्स ऑन सर ऑरेल स्टीन कलेक्शन ऑफ तिब्बतेन डाक्यूमेंट्स फ्रॉम चायनीज तुर्कस्तान, *जर्नल ऑफ दि रॉयल एशियाटिक सोसायटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एण्ड आयरलैंड,* पृ. 29।
16. रैपसन, ई. जे. (सम्पादक), (1922) *दि कैम्ब्रीज हिस्ट्री ऑफ इंडिया,* वोल्यूम I, दि यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रीज, पृ. 495।
17. टार्न, डब्ल्यू. डब्ल्यू. (1922) *दि ग्रीक्स इन बैक्ट्रीया एण्ड इंडिया,* दि यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रीज, पृ. 288।
18. कोनोव, स्टेन (सम्पादक), (1969) *कॉर्पस इंस्क्रिप्शनम् इंडिकारम्,* वोल्यूम II, भाग–1, इण्डोलोजिकल बुक हाउस, वाराणसी, पृ. 51।
19. पुरी, बी. एन. (1965) *इंडिया अंडर दि कुषाणाज,* भारतीय विद्या भवन, मुम्बई, पृ. 02।
20. कोनोव, स्टेन (सम्पादक), (1969) *कॉर्पस इंस्क्रिप्शनम् इंडिकारम्,* वोल्यूम II, भाग–1, इण्डोलोजिकल बुक हाउस, वाराणसी, पृ. 52।
21. केन्नेडी, जे. (1912) दि सेक्रेट ऑफ कनिष्क, *जर्नल ऑफ दि रॉयल एशियाटिक सोसायटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एण्ड आयरलैण्ड,* पृ. 670।
22. पुरी, बी. एन. (1965) *इंडिया अंडर दि कुषाणाज,* भारतीय विद्या भवन, मुम्बई, पृ. 06।
23. गुएस्ट, (1918) फर्दर अरेबीक इंस्क्रिप्शन ऑफ तक्षशिला, *जर्नल ऑफ दि रॉयल एशियाटिक सोसायटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एण्ड आयरलैण्ड,* पृ. 399।
24. आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, एनुअल रिपोर्ट (1928–29) पृ. 64।
25. कोनोव, स्टेन (सम्पादक), (1969) *कॉर्पस इंस्क्रिप्शनम् इंडिकारम्,* वोल्यूम II, भाग–1, इण्डोलोजिकल बुक हाउस, वाराणसी, पृ. 54
26. थॉम्पसन, जे. वी. (1932) जर्नल ऑफ दि पंजाब यूनिवर्सिटी हिस्टॉरिकल सोसायटी, *जर्नल ऑफ रॉयल एशियाटिक सोसायटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एण्ड आयरलैण्ड,* वोल्यूम 1, भाग 1, पृ. 950।
27. टेम्पल, आर. सी. एवं भण्डारकर, डी. आर. (सम्पादक), (1985) *दि इंडियन एंटिक्वेरी, ए जर्नल ऑफ ओरियंटल रिसर्च,* वोल्यूम–XL-1911, स्वाती पब्लिकेशन, दिल्ली, पृ. 45।
28. उपरोक्त।

––==00==––